

‘शिफ्ट, कंट्रोल, ऑल्ट=डिलीट’ भूमण्डलीकृत समय में ‘डिलीट’ होती संवेदना की कहानी

1. पंकज पाण्डेय (शोधार्थी), 2. डॉ. शशि पाण्डे (सहायक प्रोफेसर)

शोध सार

आधुनिक समय में कथा का रूप विकसित हुआ और इनमें घटनाओं के मध्य कार्य-कारण संबंधों के साथ भिन्न-भिन्न स्थितियों का चित्रण या प्रत्यक्षीकरण भी पाया जाने लगा, जिसे कहानी कहा गया। इस प्रकार, कहानी में कथा के आदर्शवादी तथा नैतिकतावादी दृष्टिकोण के स्थान पर यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रमुख हो गया। हिन्दी कहानी भी अपने समय और समाज के यथार्थ से प्रभावित रही है। भारत में आर्थिक उदारवाद की नीति लागू होने के पश्चात उत्पन्न हुई जटिल सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा तकनीकी स्थितियों के अंकन आज की कहानियों में देखे जा सकते हैं। लेखिका आकांक्षा पारे काशिव की कहानी **शिफ्ट, कंट्रोल, ऑल्ट=डिलीट** कंप्यूटरीकृत समय में मशीन तथा मनुष्य के संबंध के बहाने खत्म हो रही संवेदनाओं की पड़ताल है। यह कहानी न केवल संवेदना के धरातल पर बल्कि शिल्प के आधार पर भी चकित करती है।

बीज शब्द- कहानी, भूमण्डलीकरण, संवेदना, शिल्प, कंप्यूटर, इक्कीसवीं सदी, वैश्वीकरण
मूल आलेख

“बड़ी तेजी से दुनिया बनती जा रही है एक बड़ा गाँव
लोभ क्रोध ईर्ष्या द्वेष के लिए अब
कहीं और नहीं जाना पड़ता
मनुष्यों के संबंध बहुत पतले तारों से
बाँध दिए गए हैं जो बात-बात में टूट जाते हैं”

-मंगलेश डबराल की कविता ‘भूमण्डलीकरण’ से

आकांक्षा पारे काशिव की कहानी **“शिफ्ट, कंट्रोल, ऑल्ट=डिलीट”** इस बदले हुए समय में मनुष्यों के टूट रहे संबंधों तथा खत्म हो रही संवेदना की पड़ताल है। आधुनिक समय महत्वपूर्व हो गई तकनीकी, जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, ने मनुष्य के संबंधों पर ही प्रश्न चिह्न लगा दिए हैं। कहानी के मुख्य पात्र सुदीप मलिक के बयान की और कहानी की पहली पंक्ति-

“मैंने कुछ नहीं किया।”¹

सुदीप द्वारा अपनी पत्नी की हत्या के बाद यह बयान दिया गया है। इस बयान में किसी भी क्रिस्म का दुःख और पश्चाताप नहीं है बल्कि, एक क्रिस्म का ठंडापन है। इस ठंडेपन के चलते वह संवेदनहीन हो चुका है, इस सीमा तक है कि वह जीवन में मनुष्य होने की शर्तों का अतिक्रमण कर लेता है।²

कंप्यूटर में कूट भाषा का प्रयोग कर कंप्यूटर प्रोग्राम में आदेश दिया जाता है। कंप्यूटर पर काम करते-करते वह अपने कार्य व्यवहार में भी कंप्यूटरीकृत हो जाता है। कंप्यूटर पर ‘काउंटर स्ट्राइक’ गेम खेलते हुए वह यूएस सोल्जर्स की तरफ से हथियार चला रहा होता है तथा गेमिंग कंसोल के माध्यम स्क्रीन पर धड़ाधड़ यूएस सोल्जर टेरिस्टों का सफाया कर रहा होता है। चूँकि, वह पिछली तीन हफ्तों से अपने दोस्त से यह गेम हार रहा होता है इसलिए जीत के लिए उसकी तलब इस हद तक बढ़ती है कि पत्नी, अनुरीता द्वारा लगातार “आवाज कम करो, लैपी बंद कर दो, पिछले छह घंटे से तुमने घर में शोर-शराबा कर रखा है”³ कहने पर भी वह गेम ही खेलता जा रहा था क्योंकि “कल किसी भी सूरत में मुझे उसे काउंटर स्ट्राइक गेम में हराना था”⁴ अनुरीता के बार-बार कहने पर भी जब जब वह नहीं माना तो अनुरीता ने उसके हाथ से कंसोल छीन लिया और लैपटॉप बंद करना चाहा। इसी के चलते वह गेम जीत नहीं पाया और उसने अनुरीता के सर पर बेसबॉल बैट से मारकर हत्या कर दी-

“और उसने कंसोल छीन लिया. वह लैपी शट डाउन करने के लिए झपटी, उसे म्यूट करने की सारी कोशिश के बीच मैंने...सिर्फ कंप्यूटर में फाइल हटाने का परमानेंट आप्शन यूज किया, शिफ्ट, कंट्रोल, ऑल्ट=डिलीट।”⁵ यह ऐसा ही है जैसे किसी कम्प्यूटर को हत्या करने के लिए आदेश दे दिया गया हो। फिर चाहे वह गेम का टेरिस्ट हो या मनुष्य।

काउंटर स्ट्राइक जैसा कोई भी गेम, जिसमें जीत केवल इस बात पर निर्भर होती है कि किसी भी पक्ष द्वारा कितने लोगों को मारा गया है, निश्चित रूप से हमें जीवन के प्रति असंवेदनशील ही बनाते हैं। यही असंवेदना हमारे विवेक को भी

कुंद करती है। सुदीप की असंवेदनशीलता इस सीमा तक बढ़ गई कि कंप्यूटर गेम में किसी 'टेररिस्ट' को न मार पाने की खींझ उसमें इतनी अधिक हो जाती है कि इसकी एवज़ में वह अपनी पत्नी की हत्या कर देता है और उसे किसी भी प्रकार का अपराध बोध नहीं है। वह अदालत में कहता है कि –“मैंने कुछ नहीं किया. मैं बस गेम जीतने ही वाला था।”⁶ इसके अतिरिक्त, हत्या के लिए उसकी उत्कंठा इतनी अधिक है कि कंप्यूटर गेम में 'टेररिस्ट' को मार पाने का विकल्प उपलब्ध न होने पर वह विवेकशून्य हो जाता है और उसकी पत्नी ही उसे 'टेररिस्ट' लगने लगती है।

सुदीप द्वारा अनुरीता के साथ किया गया यह व्यवहार उस व्यवहार की पराकाष्ठा है जो इंस्टीट्यूट में पढ़ाई के दौरान उसके द्वारा अपनी क्लासमेट के साथ 'वर्ल्ड ऑफ़ वॉर क्राफ़्ट' कंप्यूटर गेम खेलते हुए किया गया। इस गेम में भी वह फ़ाईटर जीतता था जिसके पास अधिक हथियार जमा होते हैं। गेम हारने पर सुदीप अपनी क्लासमेट पर झपटा, “उसने मुझसे कहा मैं तब तक कमरे से बाहर नहीं जा सकती जब तक वह यह गेम दोबारा खेल कर जीत नहीं जाता।”⁷

हार्वे डी ने अपनी पुस्तक 'द कंडीशन ऑफ़ पोस्ट मॉडरनिटी'(1989) में भूमण्डलीकरण वैश्वीकरण को समय और स्थान की गति और गहनता से जुड़ा बताया। भूमण्डलीकरण के चलते पूरी दुनिया में शुरू हुए आर्थिक उदारवाद ने समाजिकता को कमजोर किया तथा निजी स्वतंत्रता के नाम पर व्यक्तिवाद को स्थापित करने का काम किया है। इसी के चलते निजी उपलब्धि को जीत समझ लिया गया है तथा प्रगति गति का प्रयाय बन गई है। “सामाजिकता के विरुद्ध वैयक्तिक महत्वाकांक्षाओं के पल्लवन की इस नियति के मूल में जिन दो शब्दों की बहुत बड़ी भूमिका है, वे हैं- जीत और गति।”⁸ यही जीत और गति सुदीप मलिक के बयान और संवाद में दिखाई पड़ती है- “मैं गेम जीत रहा था। और उसने कंसोल छीन लिया।”(जीत)⁹ तथा दोस्त के द्वारा सुदीप के विषय में जो मालूम पड़ा वह यह कि “सुदीप तो उनको (प्रो रामास्वामी को) *पी जीरो* (बहुत धीमा) प्रोसेसर कहता था।”¹⁰, “सुदीप हंसा और बोला साला 80-85 माइक्रोप्रोसेसर (पुराना तथा धीमा) तू तो हमेशा पी जीरो प्रोसेसर का प्यारा रहेगा रे।”¹¹ इसके साथ ही इसी दोस्त के मार्फ़त यह पता चलता है कि सुदीप के लिए गति के क्या मायने हैं –“ अभी तो उसने एक मस्त नया टैब खरीदा था। उसका प्लान था, आई फोन-5 लॉन्च होते ही वह उसे भी खरीद लेगा। ही इज क्रेजी अबाउट गैजेट्स।”¹² वह गति के लिए इतना प्रतिबद्ध है कि उसे समय स्थान का तक ध्यान नहीं रहता। कोर्ट में उसकी फाँसी की सजा जब टाइपराइटर से लिखी जा रही थी तब भी वह कहता है- “आप लोग कंप्यूटर इस्तेमाल नहीं करते? इस जमाने में भी टाइप राइटर?. उसने इस हिकारत से कहा जैसे टाइपराइटर का इस्तेमाल हत्या से बड़ा अपराध हो।”¹³

राकेश बिहारी 'विनर्स डोंट डू डिफरेंट थिंग्स, दे डू द थिंग्स डिफरेंटली' के बहाने हमारे भीतर रोप दी गई जीत की महत्वाकांक्षाओं को संवेदनहीन क्रूरताओं का कारण मानते हैं। “सुदीप मलिक के भीतर लगातार पल रही जीत की आकांक्षाओं और उस संभावित जीत की दहलीज पर पहुँचते-पहुँचते रह जाने की स्थिति के बाद उत्पन्न संवेदनात्मक त्रासदी से गुजरते हुये मुझे मैनेजमेंट गुरु **शिव खेड़ा** की बहुचर्चित-बहुप्रचारित किताब '**यू कैन विन**’/‘जीत आपकी’ की लगातार याद आती रही। क्या इसके पीछे येन केन प्रकारेण जीत हासिल करने की सीख देने वाली उन अत्याधुनिक व्यावसायिक सूक्तियों का कोई हाथ नहीं जो चीख-चीख कर कहती हैं – ‘विनर्स डोंट डू डिफरेंट थिंग्स, दे डू द थिंग्स डिफरेंटली?’¹⁴

भूमण्डलीकरण और अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के माध्यम से हमारे भीतर अमरीकी मूल्यों- उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद तथा नैतिकता विहीनता – को भर दिया गया है। सुदीप एक टैब खरीदने के बाद आईफोन को लॉन्च होते ही खरीद लेना चाहता था। इस बात पर विचार किए बिना कि उसे नए फ़ोन की ज़रूरत है अथवा नहीं, सुदीप नया फ़ोन खरीदना चाहता है जबकि यह आईफोन अब तक 'लॉन्च' नहीं हुआ है। कहानी से इतर यह एक तथ्य है कि भारत में आज 70 प्रतिशत से अधिक आईफोन ईएमआई या लोन पर खरीदे जा रहे हैं जबकि इससे भी सस्ते विकल्प बाज़ार में उपलब्ध हैं।¹⁵ यह चरम उपभोक्तावाद को ही स्थापित करता है कि अधिक उपभोग और अधिक वस्तुओं का स्वामी होने से अधिक सुख और खुशी मिलेगी।”¹⁶ संवेदना के शून्य होने तक सतत रूप से डेटा/ तकनीक का उपभोग करने की उसकी लत को लेकर उसकी सहकर्मी कहती है कि “मुझे कोई आश्चर्य नहीं की उसने बेसबॉल के बैट से अनुरीता का सिर फोड़ दिया। फिर उसके टुकड़े कर डीप फ्रीजर में बंद कर ताला लगा कर चल दिया। और अपने स्मार्ट फोन से फेसबुक पर मैसेज पोस्ट करता रहा, ट्वीट करता रहा. वह इतना बेरहम, वहशी हो सकता है। बिलकुल हो सकता है।”¹⁷

इसके साथ ही, 'काउंटर स्ट्राइक' के नाम पर खेले जाने वाले गेम से इस विचार को स्थापित किया जा रहा है कि अमेरिका दुनिया भर में आतंकवाद के खिलाप लड़ रहा है जबकि, अमरीका दुनिया भर में सर्वाधिक (लगभग 42%) हथियारों का निर्यात करता है।¹⁸ इसी विचार से भरे हुए होने के चलते 'काउंटर स्ट्राइक' गेम खेलते हुए उसे लगता है कि वह आतंकवाद से लड़ रहा है- “आखिरी टेरेरिस्ट बस खत्म होने को था उसने मेरे हाथ से कंसोल छीन लिया।”¹⁹ और यही विचार गेम के 'टेररिस्ट' और अपनी पत्नी में अंतर नहीं कर पाता। उसे इस बात का भी कोई अपराधबोध नहीं है कि उसने अपनी पत्नी को मार डाला- “आप समझ रहे हैं? समझ रहे हैं आप...मैं गेम जीत रहा था। और उसने कंसोल छीन लिया. वह लैपी शट डाउन

करने के लिए झपटी, उसे म्यूट करने की सारी कोशिश के बीच मैंने...सिर्फ कंप्यूटर में फाइल हटाने का परमानेंट आप्शन यूज किया, शिफ्ट, कंट्रोल, अल्ट=डिलीट।”²⁰ चरम उपभोग हमें कितना कितना अनैतिक बनाता है इस स्तर पर यह कहानी संजय खाती की कहानी ‘पिटी का साबुन’ का अगला पड़ाव मालूम पड़ती है, जिसका नायक साबुन का उपयोग किए जाने के कारण अपने काका पर हमला कर देता है। हाँ, वहाँ संवेदना बची हुई है जिस कारण काका गोपी की शिकायत नहीं करता है।²¹ लेकिन यहाँ संवेदना डिलीट हो जाती है।

“यह किसी देश की अर्थव्यवस्था के विकास का मॉडल भर नहीं बल्कि आर्थिक क्रिया-कलापों के बहाने दूसरे देशों की युवा प्रतिभाओं के मानसिक अनुकूलन की सुनियोजित रणनीति का हिस्सा है। सच है कि इतिहास का पुनर्लेखन सिर्फ इतिहास के पन्नों तक ही सीमित नहीं होता बल्कि उसका एक बड़ा और प्रभावी हिस्सा किसी सूक्ष्म रणनीति के तहत जीवन के अन्यान्य क्षेत्रों से गुजरता हुआ कब हमारे दैनंदिनी का हिस्सा बन जाता है, हमें पता ही नहीं चलता।”²²

कहानी में उत्पादों से घिरे हर व्यक्ति को उपभोक्ता बनाए जाने की प्रक्रिया भी समझ आती है। उपभोक्ता में तब्दील होते ही मनुष्य संवेदनहीन होने लगता है। नियोक्ता पहले तो ऐसी सुविधाओं को अपना मुनाफ़ा बढ़ाने के लिए देते हैं लेकिन इस मुनाफ़ाखोरी से काम कर रहे कर्मचारियों पर और उनके निजी जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है इससे उन्हें कुछ भी मतलब नहीं। “बाकी पर्सनल लाइफ से हमें क्या करना है सर। *** हर फ्लोर पर टी-कॉफी मशीन्स हैं, पूरी बिल्डिंग सेंट्रली एयरकंडीशंड है। यहां तक की टॉयलेट और कॉरीडोर में भी। हर डेस्क पर एपल मैक सिस्टम हैं सर। सभी को कंपनी की तरफ से लैपी भी दिए गए हैं। ताकि वक्त पडने पर ये लोग वर्क एट होम कर सकें।”²³

नियोक्ता के द्वारा अपने बयान में यह बताया गया कि कार्यालयों में प्रदान की जा रही सुविधाओं के चलते कर्मचारी घर ही नहीं जाना चाहते हैं। वे रात दिन कार्यालयों में ही बिता कर हर सुविधा का उपभोग कर लेना चाहते हैं। “पर मैं एक बात बताऊं सर अगर ये लोग चाहें न तो सुबह नौ से शाम छह बजे तक आराम से काम कर सकते हैं। लेकिन करते ही नहीं हैं। इन लोगों को न सर कंप्यूटर पर बैठने की लत लग गई है। मस्त एसी में बैठते हैं, दिन भर आमंड, लैमन, तुलसी फ्लेवर की चाय पीते हैं और रात को खूब गेम और फिल्में डाउनलोड करते रहते हैं। यहां 5 एमबीपीएस की स्पीड से डेटा ट्रांसफर कर सकते हैं सर! 5 एमबीपीएस! घर पर ये सुविधा कहां मिलेगी सर।”²⁴ “संबंध और संवेदना जो कभी घर का आधार हुआ करते थे, को जब सुविधाओं के आकलन के अर्थशास्त्र ने विस्थापित कर रखा हो फिर घर जाने की जरूरत ही क्या?”²⁵

समस्याओं को देख समझ लेने पर भी आँखें मूँदे रखना भूमण्डलीकृत समय की एक पहचान बन गई है और तब तक इन पर ध्यान नहीं दिया जाता है जब तक कि अधिक मुनाफ़ा पैदा करने वाली वाली स्थितियाँ पैदा न हो जाए। और मुनाफ़ा यदि हो रहा हो तो कोई भी पुराना उत्पाद, नए से बदल दिया जाता है। “जो कुछ भी है सब खत्म होगा एक बढ़िया उत्पाद से या बढ़िया तरीके से या बढ़िया संगठन से या बढ़िया रणनीति से।”²⁶ कहानी में मनोचिकित्सक कहता है “एक युवा कंप्यूटर इंजीनियर ने जब अपनी पत्नी की हत्या कर दी तो हम सब जागे हैं। यह मामला ठंडा हो जाएगा और हम फिर अपने-अपने काम में इस किस्से को भूल जाएंगे।”²⁷ इस व्यवस्था के लिए न चाहते हुए भी हम विद्यार्थियों को तैयार कर रहे हैं। सुदीप के कॉलेज के ‘इंडियन टेक्निकल इंस्टीट्यूट’ के रिटायर प्रोफेसर कहते हैं कि “हमारे कॉलेज की शानदार बिल्डिंग है, बड़ा खेल का मैदान है। इनडोर-आउटडोर दोनों तरह के गेम के लिए अच्छी सुविधाएं हैं। फिर भी मैदान खाली पड़े रहते हैं। ज्यादातर स्टूडेंट भारी परदों से ढकी उस कंप्यूटर लैब में अपना समय गुजारते हैं, जहां पता ही नहीं चलता कब दिन ढला, कब बारिश हुई, कब खूबसूरत शाम बीत गई। लैब में हर स्टूडेंट अपनी दुनिया में गाफिल है। उसे अपने आस-पड़ोस से भी कुछ लेना देना नहीं है। कॉलेज के चारों हॉस्टल वाई-फाई हैं। रही-सही कसर यहां पूरी हो जाती है। कंप्यूटर स्क्रीन के अलावा वे दुनिया को किसी और माध्यम से समझना ही नहीं चाहते।”²⁸

सामाजिक अलगाव इस कहानी का एक अन्य महत्वपूर्ण बिंदु है। सुदीप हर समय कंप्यूटर पर बैठा रहता था। उसे इस बात से फ़र्क नहीं पड़ता है कि उसके आस-पास कोई बैठा है। उसकी मित्र अपने बयान में कहती है कि “मैं कहती थी, जब देखो यह प्लास्टिक पीटा करते हो। स्क्रीन से सिर उठा कर कभी मेरी शक्ल भी देख लिया करो। अरे मैं तुमसे बोल रही हूँ। सुन रहे हो। मैं बक नहीं रही। जब देखो लैपटॉप में सिर दिए बैठे रहते हो।”²⁹ प्रेम और साहचर्य जैसे कोई भी भाव उसके जीवन में ही नहीं हैं। “मुझे लगता था कि वह मुझसे प्यार करता है, क्योंकि पूरी क्लास में वह सिर्फ मुझ से ही बात किया करता था। लेकिन धीरे-धीरे मैंने समझा वह बस अपने कंप्यूटर से ही प्यार कर सकता है। लेकिन धीरे-धीरे मैंने समझा वह बस अपने कंप्यूटर से ही प्यार कर सकता है।”³⁰

इस पूरी प्रक्रिया में वह समाज से ही कट जाता है। वह अपने साथियों से सीधे बात न कर फ़ेसबुक पर चैट करता था। सामाजिक अलगाव के चलते वह अदालत में यही निर्णय सुनाया जाता है कि- “मुलजिम समाज से बिलकुल कट चुका है और उसे अपने किए पर कोई पछतावा भी नहीं है। उसने इस कल्ल में जिस बेरहमी का परिचय दिया है वह क्षमा योग्य नहीं है।”³¹ किंतु इसी क्रम में वह स्वयं से कट जाता है, और उसे अपने अच्छे बुरे का भी कोई ध्यान नहीं रहता है। “उसका ध्यान

जज की बात सुनने के बजाय कोने में लटक रही एक मकड़ी पर अटक था। मकड़ी लटक कर छत पर जाती और फिर झूल कर दोबारा छत पर पहुंच रही थी।³² उसे उसकी अंतिम इच्छा पूछे जाने पर वह जीवन के बजाय लॉच हुए नए गेम को खेल लेना चाहता है- “कहीं इंटरनेट कनेक्शन होगा क्या? निंजा एंड ग्लैडिएटरर्स गेम का फिफ्थ पार्ट आने वाला था। सोच रहा हूँ, एक बार चैक कर लेता..”³³

शिल्प के स्तर पर भी कहानी भूमण्डलीकृत हो रही संवेदनाओं को ठीक से प्रस्तुत करती है। पूरी कहानी कंप्यूटर की शब्दावली से भरी हुई है। यह इस समय का सच है कि हम अपनी सहज शब्दावली का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। कहानी के नायक को भी ‘गीक’ कहा गया है। कहानी का शीर्षक ही कंप्यूटर की दुनिया से संबंधित है। “डेटा, डेटाबेस, प्रोग्रामिंग, जैसे अनेक प्रत्ययों, उपकरणों का जन्म हो चुका है, जो हमारे अब तक के ज्ञान मीमांसा क्षेत्र के लिए नितांत नए हैं। हमारे घर के बेटे यही भाषा बोल रहे हैं इन्हीं नये प्रत्ययों से वे इस यथार्थ का अभिग्रहण कर रहे हैं।”³⁴ बदली हुई संवेदना के प्रकटीकरण के संबंध में राकेश बिहारी कहते हैं –“आज कहानी की परिधि में सिर्फ घटना या चरित्र प्रमुख नहीं होते हैं। कई बार घटनाएँ अनुषंग होती हैं और चरित्रों की मनःस्थितियाँ और उनके अन्तर्द्वन्द्व प्राणतत्त्व।”³⁵ इस कहानी में किसी एक रूप के माध्यम से कहानी नहीं कही गई है बल्कि, सुदीप के इक़बालिया बयान, टीवी पर चल रही डिबेट, अदालत की कार्यवाही, दोस्तों-सहकर्मियों के कथ्य पर आधारित है। यह भूमण्डलीकृत समय की जटिलता के परिचायक के रूप में है कि यथार्थ सरल और सहज नहीं रहा गया है इसलिए अनेक रूपों से जोड़ कर एक रूप बनाया गया है। यथार्थ की जटिलता के चलते ही सहज मानवीय भावों का संप्रेषण संभव नहीं रह गया है। राकेश बिहारी रूप के संबंध में कहते हैं कि “अब तो कई बार कहानी, संस्मरण, रिपोर्टाज, खबर, सूचना, इतिहास, दर्शन आदि के बीच की लकीरें भी मिटती-टूटती दिखाई देने लगी हैं।”³⁶

निष्कर्ष- इस प्रकार आकांक्षा पारे काशिव की कहानी ‘शिफ्ट,कंट्रोल,ऑल्ट=डिलीट’ भूमण्डलीकृत समय में मानवीय संवेदनाओं के डिलीट (समाप्त) होने की कहानी है। कहानी में हत्यारा इतना आत्मकेन्द्रित हो जाता है कि वह पत्नी की हत्या कर देता है। इस हत्या को वह मशीनी भाव से करता है जैसे कंप्यूटर को हत्या का कोई आदेश दिया गया हो। यह कहानी अपने कथ्य तथा शिल्प से जिस संवेदना का प्रसार करती है वह समय के साथ गहरा ही रही है।

संदर्भ-

1. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 11
2. <https://samalochan.blogspot.com/2014/07/2.html> (गुम होती संवेदना: राकेश बिहारी का लेख)
3. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 11
4. वही, पृष्ठ 11
5. वही, पृष्ठ 11
6. वही, पृष्ठ 11
7. वही, पृष्ठ 14
8. <https://samalochan.blogspot.com/2014/07/2.html>
9. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 11
10. वही, पृष्ठ 12
11. वही, पृष्ठ 13
12. वही, पृष्ठ 13
13. वही, पृष्ठ 14
14. <https://samalochan.blogspot.com/2014/07/2.html>
15. <https://bit.ly/3ZbrkR4> Apple: Winning the market, one EMI at a time
16. <https://hi.wikipedia.org/wiki/उपभोक्तावाद>
17. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 14
18. <https://bit.ly/47d4kmJ> Market share of the leading exporters of major weapons between 2019 and 2023, by country
19. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 11
20. वही
21. हिन्दी कहानी वाया आलोचना, 2022 गाँव में उपभोक्तावाद का प्रवेश पेज 463
22. <https://samalochan.blogspot.com/2014/07/2.html>
23. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 13
24. वही
25. <https://samalochan.blogspot.com/2014/07/2.html>

26. Rediscovering Schumpeter: The power of capitalism <https://bit.ly/3XbGUcJ>
27. हंस, जनवरी 2014 , पृष्ठ 13
28. वही, पृष्ठ 13
29. वही, पृष्ठ 14
30. वही, पृष्ठ 14
31. वही, पृष्ठ 14
32. वही, पृष्ठ 14
33. वही, पृष्ठ 14
34. उदय प्रकाश, ईश्वर की आँख, वाणी प्रकाशन 1999, पेज 77
35. संतोष कुमार चतुर्वेदी (संपादक), अनहद, जनवरी 2011
36. हरि भटनागर (अंक संपादक), रचना समय, जनवरी-फ़रवरी 2016

